Executive Summary of UGC minor project of Dr. Sindhu A, Payyanur College, Edat P.O, Payyanur, Kannur District, Kerala under MRP(H)(plan) MRP(H)-0383/12-13/KLKA002/UGC-SWRO entitled "DALIT SWATHVA KE THALASHA DALIT LEKAKO KE UPANYASO ME"

1.The Objectives Achieved through the Project

मेरे इस परियोजना कार्य से दलित समाज के साँस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा पारिवारिक समस्याओं के बारे में विशद रूप से समझने का प्रयास किया है। भारत के राष्ट्रीय इतिहास को प्रश्नांकित करने और उसे एक नई दृष्टि से देखने की ओर मै ने ज़ोर दिया है। दलितों के शैक्षिक और आर्थिक स्तर ऊपर उठाने की कोशिशें के बावजूद उनके सामाजिक व साँस्कृतिक स्तर पर कोई परिवर्तन नहीं होता। इस समस्या का कोई समाधान आज़ादी मिलने के सत्तर वर्ष के बाद भी नहीं हो पाया है। भारतीय परंपरा के अनुसार व्यक्ति का जन्म जाति में होता है। लाख कोशिश करने पर भी वह अपनी जाति का शिकंजा तोड नहीं पाता। मैं ने अपने इस अध्ययन से यह साबित करने का प्रयास किया है कि जब तक जाति रहित समाज का निर्माण नहीं होता तब तक दलित समाज का उद्धार असंभव है। मेरा अध्ययन यह साबित करने का प्रयास करता है कि जातीयता के आधार पर बने परिवार का टूट जाना जातीयता के अंत का एकमात्र समाधान है।

2. Achievements from the Project

दलित उपन्यासों के आधार पर किए गए इस अध्ययन से वैयक्तिक तथा अकादमिक अनुभव में काफी बढ़ावा हुआ है। दलित साहित्य का जो सौन्दर्यशास्त्र है उसके आधार पर अन्य साहित्य को परखने और समझने का मेरा प्रयास रहा है। जिस दृष्टिकोण से आजतक मैंने साहित्य और इतिहास को देखा था और पढ़ा था दलित अध्ययन के उपरान्त उससे बिलकुल ही भिन्न दृष्टि मुझे हासिल हुई सी लगती है। मेरे अध्ययन-अध्यापन में भी काफी बदलाव आया। समाज को विशाल दृष्टि से देखने को प्रेरणा मिली। क्लास की चार दीवारों के भीतर के और बाहर के छात्र समूहों से मेरा आदान-प्रदान ही बदल गया। मेरी नजरिया ही इस अध्ययन से परिवर्तित हुई।

3. Summary of the findings

किसी भी समाज का स्वत्व निर्माण तभी संभव होता है जब देश काल द्वारा निर्णीत अनुभवों को अन्यों की नज़र से न होकर स्वयं पहचानने लगते है। यह पहचान ही एक समाज को स्वत्व प्रदान करती है। हाशिएकृत समाज वर्तमान समय में अपने स्वत्व की तलाश में है। ब्राह्मण या सवर्ण समाज द्वारा निर्गीत दलित अपने स्वत्व के निर्माण की प्रक्रिया में लगे हुए है। स्वत्व निर्माण एक प्रक्रिया है। यह प्रतिनिधित्व और पहचान है। अन्यों द्वारा निर्धारित अपने को वे (दलित) आज अपनी नज़र से देख रहे है

और पहचान रहे है। अन्यों द्वारा दी जाने वाली सामाजिक इमेज को नकार कर अपना प्रतिबिंब (इमेज) स्वयं बना रहे है। इसके लिए साहित्य को एक औजार के रूप में वे स्वीकार रहे है।

साहित्य सामाजिक परिवर्तन का एक औजार है। साथ ही साथ ये समाज का प्रतिबिंब भी है। जब दलित अपने स्वत्व की स्थापना का प्रयास करते है तब वे साहित्य रूपी औजार को इसके लिए इस्तेमाल करते है। सदियों से दबाये गये शब्द जब बाहर निकले लगते है तब वह शब्द विस्फोट के साथ बाहर आ जाते है। दलितों का शब्द भी साहित्य समाज में विस्फोट के साथ सुनाई दे रहे। दलित स्वत्व की स्थापना दलित लेखकों के उपन्यासों में पर्चे में इसी शब्द को ढूँढ निकालने का प्रयास किया है। इसके लिए जस तस भई सवेर, छप्पर, मुक्तिपर्व आदि उपन्यासों को लिया गया। अध्ययन की सुविधा के लिए, दलित चिंतन का वैचारिक पक्ष दलित जीवन; शिक्षा तथा सामाजिक संबंध दलितत्व का राजनीतिक वर्तमान, राष्ट्रीय संस्कृति का विखंडन जैसे चार अध्यायों में विभाजित किया।इस अध्ययन के आधार पर मिले तथ्यों को उपसंहार में संकलित किया गया है।

पढे गये तीनों उपन्यास दलितों की शिक्षा और उससे मिलने वाली स्वतंत्रता और दलित मुक्ति के मार्ग के रूप में स्वीकारते है। भारत की राष्ट्रीयता संबंधी विचारों पर प्रशन चिह्न लगाने की चर्चा उपन्यास करता हैं परंपरा, इतिहास, सामाजिक संरचना आदि को तोड कर नए ढंग से उसे परिभाषित करने की आवश्यकता पर यह अध्ययन जोर देते है। उपस्थित परिवार संकल्पना को तोडकर वंशीयता पर न अधिष्ठित पारिवारिक संकल्प को अध्ययन आगे रखते है। मुख्यधारा उपन्यास साहित्य से भिन्न दलित उपन्यास की अलग सौन्दर्यशास्त्र और उसकी उपयोगिता की चर्चा प्रस्तुत अध्ययन करते है।

4.Contribution to the Society

इस अध्ययन के द्वारा कण्णूर विश्वविद्यालय के पाठ्य विभाग में मैं ने दलित साहित्य के अध्ययन का विषय बनाया। इससे छात्र छात्राओं को दलित समाज के बारे में समझाने का अवसर मिला साथ ही साथ मुझे स्वयं उनकी दयनीय दशा का एहसास भी हुआ।